International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Sep-Oct- 2017, Volume-4, Issue-5
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

शमशेर बहादुर सिंह के काव्य में सामाजिक स्वर

दामोदर लाल मीना

व्याख्याता हिन्दी राजकीय महाविद्यालय

करौली राजस्थान

सार

शमशेर की संवेदनशीलता उन्हें एक बड़ा और विशिष्ट कवि बनाती है। प्रतिगातिवादी चेतना और प्रयोगवादी चेतना के परस्पर अंतर्विरोध उनकी कविताओं में घुल जाते हैं और एक आकर्षक सामंजन का सृजन करते हैं। उनकी रचनात्मकता का एक विशेष दृष्टिकोण यह है कि वह अनुभूति की सच्चाई पर बल देते हैं। यह सच्चाई ही उन्हें फिर यथार्थपरक अभिव्यक्ति और मानवीय भावनाओं का कवि बनाती है।

शमशेर की अनुभूतियाँ इतनी विविध और जटिल रही हैं कि वह किसी पारंपरिक ढाँचे में अभिव्यक्त नहीं हो सकती थीं। यही कारण है कि वह अपना स्वयं का शिल्प विकसित करते हैं। उनकी कविताओं का शिल्प अनूठा है जिसे उन्होंने किसी कुशल शिल्पकार की तरह प्रयोग किया है। इसके साथ ही कविता में वह शब्दों की मितव्ययिता पर बल देते हैं। कई कविताएँ महज संकेतों में ही अपना पाठ दे पाती है। इससे पाठक को पाठ की व्यापक छूट प्राप्त होती है और उनके अपने अपने शमशेर तैयार होते हैं। भाषा को लेकर भी वह अत्यंत सजग रहे और इसकी अवहेलना के खतरे से आगाह किया। उन्होंने अपनी कविताओं में उर्दू के शब्दों का भी खुलकर इस्तेमाल किया और हिंदी–उर्दू की दूरी पाटने में महत्त्वपूर्ण योगदान किया।

हिंदी में चित्र और संगीत पर कविताओं का विधिवत आरंभ शमशेर से ही माना जाता है। मुक्तिबोध ने कहा था कि शमशेर की मूल मनोवृत्ति एक इम्प्रेशनिस्ट चित्रकार की है। उनकी कविताओं में रंग अपनी संपूर्ण आभा के साथ बिखरे नजर आते हैं। उन्हें चित्रकला और काव्यकला के बीच के सेतु के रूप में देखा जाता है।

कुछ कविताएँ (1956), कुछ और कविताएँ (1961), चुका भी नहीं हूँ मैं (1975), इतने पास अपने (1980), उदिता–अभिव्यक्ति का संघर्ष (1980), बात बोलेगी (1981), काल तुझसे होड़ है मेरी (1988) उनके कविता–संग्रह हैं जबकि उनका एकमात्र कहानी–संग्रह प्लाट का मोर्चा शीर्षक से संकलित है। दोआब उनकी आलोचनात्मक

कृति है। शमशेर का समग्र गद्य कुछ गद्य रचनाएँ तथा कुछ और गद्य रचनाएँ नामक पुस्तकों में संगृहीत हैं। उन्हें चुका भी नहीं हूँ मैं कविता–संग्रह के लिए वर्ष 1977 के साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

भूमिका

प्रयोगवाद और नई कविताओं के अग्रणी कवि शमशेर बहादुर सिंह का जन्म 13 जनवरी 1911 को हुआ था। शमशेर के पास हिंदी तथा उर्दू की बराबर पकड़ थी। अज्ञेय और शमशेर दो अलग–अलग दिशाओं के ध्वजवाहक हैं। अज्ञेय जहां वस्तु और रूपाकार के बीच संतुलन स्थाअपित करते हैं वहीं शमशेर में शिल्प कौशल के प्रति अतिरिक्त जागरुकता है। शमशेर की कविताएं आधुनिक काव्य–बोध के अधिक निकट हैं, कविताएं ऐसे बिंबों के साथ आती हैं कि उसमें पाठक तथा श्रोता के सहयोग की स्थिति कायम है। उनका बिम्बविधान एकदम श्रेडीमेडश नहीं है। वह श्सामाजिकश आस्वादन को पूरी छूट देता है। उर्दू की गजल से प्रभावित होने पर भी उन्होंने काव्य–शिल्प के नवीनतम रूपों को अपनाया है। शमशेर बहादुर सिंह का निधन 12 मई 1993 को हुआ था।

शमशेर बहादुर सिंह हिन्दी साहित्य में कोमल और मांसल सौंदर्य के लिए पारखी नजर रखे हुए हैं। या यूं कहें कि वह आजीवन प्रगतिवादी विचारधारा के समर्थक रहे हैं। प्रेम और सौंदर्य की उपासना शांति के लिए उनका शगल है। उन्होंने स्वाधीनता और क्रांति को अपनी निजी चीज की तरह अपनाया। शमशेर के विरह गहरे और स्थारयी थे। एकांत पथिक की झलक उनमें दिखती हैं। वह अवसरवादी नहीं है। वह विचारों को छोड़ते नहीं ना ही उनको जल्दी से पकड़ते, बल्कि वह तो उन कवियों में से थे जिनके लिए मार्क्सवाद और भारत की सांस्कृतिक परंपरा में कोई विरोध नहीं था। यह एक ही प्रारूप के दो फलक हैं।

प्रयोगवाद और नई कविताओं के अग्रणी कवि शमशेर बहादुर सिंह का जन्म 13 जनवरी 1911 को हुआ था। शमशेर के पास हिंदी तथा उर्दू की बराबर पकड़ थी। अज्ञेय और शमशेर दो अलग–अलग दिशाओं के ध्वजवाहक हैं। अज्ञेय जहां वस्तु और रूपाकार के बीच संतुलन स्थाअपित करते हैं वहीं शमशेर में शिल्प कौशल के प्रति अतिरिक्त जागरुकता है। शमशेर की कविताएं आधुनिक काव्य–बोध के अधिक निकट हैं, कविताएं ऐसे बिंबों के साथ आती हैं कि उसमें पाठक तथा श्रोता के सहयोग की स्थिति कायम है। उनका बिम्बविधान एकदम श्रेडीमेडश नहीं है। वह श्सामाजिकश आस्वादन को पूरी छूट देता है। उर्दू की गजल से प्रभावित होने पर भी उन्होंने काव्य–शिल्प के नवीनतम रूपों को अपनाया है। शमशेर बहादुर सिंह का निधन 12 मई 1993 को हुआ था।

शमशेर बहादुर सिंह हिन्दी साहित्य में कोमल और मांसल सौंदर्य के लिए पारखी नजर रखे हुए हैं। या यूं कहें कि वह आजीवन प्रगतिवादी विचारधारा के समर्थक रहे हैं। प्रेम और सौंदर्य की उपासना शांति के लिए उनका शगल है। उन्होंने स्वाधीनता और क्रांति को अपनी निजी चीज की तरह अपनाया। शमशेर के विरह गहरे और स्थारयी थे। एकांत पथिक की झलक उनमें दिखती हैं। वह अवसरवादी नहीं है। वह विचारों को छोड़ते नहीं ना ही उनको जल्दी से पकड़ते, बल्कि वह तो उन कवियों में से थे जिनके लिए मार्क्सवाद और भारत की सांस्कृतिक परंपरा में कोई विरोध नहीं था। यह एक ही प्रारूप के दो फलक हैं।

शमशेर बहादुर सिंह आधुनिक दौर के सबसे जटिल कवि माने जाते हैं। यह सच है कि उनकी काव्य–संवेदना सरल नहीं है, लेकिन कविता के पाठकों के बीच शमशेर के दुरूह माने जाने के पीछे कुछ कारण रहे हैं। आम तौर पर हम किसी रचनाकार को पढ़ते समय पहले उसका विचार जानने की कोशिश करते हैं। अगर इस विचार के बारे में हमें किसी भी तरह कुछ पता चल जाता है, तो उसी के साँचे में उसकी सारी रचनाओं को बैठाकर देखने लगते हैं। उदाहरण के लिए, रामधारी सिंह दिनकर के विषय में प्रचलित मान्यता है कि वे उग्र राष्ट्रवादी विचारों के थे।

उनकी अनेक कविताएँ इसकी पुष्टि करती हैं। उसी प्रकार यह कहा जाता है कि नए पत्ते के दौर के निराला साम्यवादी विचारों से प्रभावित हैं, नामार्जुन प्रगतिशील हैं, अज्ञेय रहस्यवादी हैं. राजकमल चौधरी अराजकतावादी हैं, इत्यादि। किंतु कवियों के साथ इस प्रकार के विशेषण एक सीमा तक ही कवि–संसार में प्रवेश करने में पाठक के लिए सहायक होते हैं। प्रायः तो यह देखा गया है कि इस प्रकार के विशेषण कवि के संपूर्ण कर्म को समझने के रास्ते में बाधक बन जाते हैं। सुसंगत विचार या विचारधारा खोजने में विश्वास रखने वालों की परेशानी तब और बढ़ जाती है जब लेखक अपनी टिप्पणियों, निबंधों और वक्तव्यों में जिन विचारों का समर्थन करता हुआ, जिनका प्रचार करता हुआ दिखलाई पड़ता है, उसकी कविताएँ कहीं भी उनके मेल में पड़ती नहीं दीखतीं। इसके चलते उलझन में पड़ा हुआ पाठक–आलोचक कवि में अंतर्विरोधों के दर्शन करने लगता है और फिर इन अंतर्विरोधों की सामाजिक–आर्थिक, मनोवैज्ञानिक व्याख्याएँ प्रस्तुत करता है।

किसी कवि को पढ़ने समझने और उससे आत्मीयता स्थापित करने के मार्ग में इस प्रकार की व्याख्याओं से दिशा–भ्रम के अलावा और कुछ नहीं होता। शमशेर बहादुर सिंह को पढ़ते समय इस दिशा में और भी सतर्कता जरूरी है।

शमशेर बहादुर सिंह की कविताओं को लेकर अच्छे भले रसज्ञ शिकायत करते पाए जाते हैं कि इनका पूरा आनंद उठाने में उन्हें दिक्कत पेश आती है। शमशेर ने 1949 में जब अपना पहला कविता–संग्रह उदिता तैयार किया (जो उस साल छप न सका) तो उसकी भूमिका में इस परेशानी का जिक्र यों किया दृ बाज मेरे दोस्तों को मेरी कुछ रचनाओं से लुत्फ उठाने में दिक्कत महसूस हुई है, जहाँ मैं समझता हूँ कि न होनी चाहिए थी या जितनी हुई उससे बहुत कम होनी चाहिए थी। अपनी कविताओं को लेकर वे इतने आश्वस्त क्यों हैं?

वे आगे बताते हैं– ण्ण्.जब ये रचनाएँ लिखी गई. उस वक्त मुझे किसी पाठक की दिक्कत का ख्याल नहीं थाण्. .सिवाय अपने उस पाठक के, जिसके सामने मैंने अपनी बातों को खास अपने लहजे में, खास अपने मन के रंग में, अपनी लय, अपने सुर में, खोलकर, एक ख़ ाब की तरह, एक उलझी हुई याद के बहुत अपने छायाचित्र की तरह, रखने की कोशिश की है।

तात्पर्य यह कि शमशेर अत्यंत ही निजी–भाव की कविताएँ लिख रहे थे। उनका कवितारंभ हिंदी में छायावादी स्वर के उत्कर्ष में हुआ। छायावाद की श्रेष्ठतम रचनाएँ लिखी जा चुकी और स्वयं उसके स्थपतियों को अब कविता के नए रूपाकार की आवश्यकता का अनुभव हो रहा था। इसी समय, छायावाद का गहरा रंग लिए लेकिन भावों और वाणी में सरलता के उद्दाम आवेग का एक रेला भी आया, जिसे बाद में सुविधा के लिए उत्तर छायावादी काव्य कहा गया। दरअसल यह स्वच्छंदतावाद की ही एक धारा थी। शमशेर की आरंभिक कविताओं की पृष्ठभूमि छायावादी और उत्तर–छायावादी काव्य–संस्कारों से निर्मित हुई। लेकिन उनकी एकांत–प्रियता और विशिष्ट निजीपन ने उनकी कविताओं को नितांत भिन्न स्वर और रूप प्रदान किया। इसलिए आरंभिक दौर से लेकर तो बाद तक के शमशेर को पढ़ते समय इस बात के प्रति सावधान रहना भी आवश्यक है कि उन्हें किसी एक काव्य–धारणा के लक्षणों के आधार पर समझने की कोशिश न की जाए।

दूसरी गड़बड़ी, जो प्रायः शमशेर की कविताओं के साथ हुई है और जिसकी ओर आलोचक नंदकिशोर नवल ने इशारा किया है, वह है उनमें नागार्जुन और केदारनाथ अग्रवाल की तरह ठोस अर्थ की खोज करना, जबकि उनके अनुसार शमशेर ने अर्थ को ज्यादा से ज्यादा छोड़कर कविता लिखी है। डॉ.. नवल का मत है कि शमशेर ने अर्थ को अधिक से अधिक छोड़कर कविता लिखी और उसमें वह जादू भर दिया, जो अधिक से अधिक मानवीय है और अधिक से अधिक कविता का जादु। दिक्कत सिर्फ यह है, जैसा कि ऊपर भी कहा गया है कि

उन्हें प्रायः कलावाद, रूपवाद, अतियथार्थवाद और प्रभाववाद के द्वारा समझने–समझाने की कोशिश की गई है, जिससे उनकी दुरूहता घटने के बदले बढ़ती ही चली गई है। शमशेर बहादुर सिंह के काव्य में सामाजिक स्वर

कला या कविता के दायित्व और उसके कार्य–क्षेत्र को लेकर चलने वाले वाद–विवाद में शमशेर शुरू से अंत तक इस मत के बने रहे कि जनता के प्रति जो दायित्व है उसे कवि को नहीं भूलना चाहिए। लेकिन जनता के प्रति दायित्व के लिए कटोरता से कार्यक्रम नहीं बनाया जा सकता। कला के सामाजिक दायित्व–निर्वाह का यह मसला उन्हें शुरू से परेशान करता रहा था। कारण यह था कि खुद उन्हें नागार्जुन, केदार, सुमन, दिनकर आदि के मुकाबले समाज के लिए उपयोगी नहीं पाया गया था।

अपने संग्रहों की भूमिकाओं में या अन्यत्र यह कहकर कि उनकी रचनाएँ सामाजिक दृष्टि से उपयोगी नहीं है, भले ही शमशेर ने इस प्रचलित धारणा को कुछ बल पहुंचाया हो, लेकिन इससे यह समझना गलत होगा कि कला की सामाजिक उपयोगिता की सरलीकृत अवधारणा को उन्होंने स्वीकार कर लिया था। वे यह मानते रहे कि एक बड़ा रचनाकार अंततः जनता की ही सेवा करता है। विश्व–साहित्य के व्यापक और गहन अध्ययन ने उन्हें यह मत स्थिर करने की ओर प्रेरित किया था कि विषय कुछ भी हो, यदि रचनाकार खरा है तो वह मानवीय संवेदना का संस्कार ही करता है। इसी प्रकार वह उपयोगी हो सकती है। अच्छी कविता उनके लिए वह थी जो विचार ही नहीं, कविता का आनंद, रस और गहरी काव्यानुभूति भी प्रदान करे।

ऐसी कविता वे ही लिखते हैं, जिनमें समकालीन नाना परिस्थितियों के प्रति नैसर्गिक संवेदना हो, जो खुद को इन परिस्थितियों में कहीं न कहीं बौद्धिक, नैतिक या आध्यात्मिक रूप से गहराई से जुड़ा हुआ महसूस करते हों, जिनमें अभिव्यक्ति की अनिवार्यता तो हो ही, उसमें विशेष बल या जोर भी हो। इन गुणों से युक्त कवि जब भी रचना करते हैं तो वे हमारे चारों ओर बिखरे पड़े सौंदर्य से बेखबर हमारे मन को उसके किसी न किसी पक्ष की तरफ मोड़ने में सफल होते हैं। इस तरह वे अपने तरीके से उस माहौल का मुकाबला तैयार करते हैं जो हमारे सोचने–विचारने की ताकत को कुंद करने से पहले हमारी इंद्रियों की संवेदन–क्षमता को सीमित करता है।

शमशेर के लिए कविता या कला का काम, दुनिया में, समाज में जो कुछ घट रहा है, उसे अभिव्यक्त करना भर नहीं है। इस रूप में तो बाकी दुनियावी कामों के मुकाबले उसका दर्जा दोयम ठहरता है। पर शमशेर उसे यह हीन पद देने को तैयार नहीं। कविता जीवन–व्यापार की अभिव्यक्ति मात्र नहीं, वह स्वयं एक जीवन–व्यापार है।

चुका भी हूँ मैं नहीं की भूमिका का अंत उन्होंने इस सार्थक वाक्य से किया है जो कविता की उपयोगिता को एक नए अंदाज में चिह्नित करता है दृ काव्य–कला समेत जीवन के सारे व्यापार एक लीला ही हैं दृ और यह लीला मनुष्य के सामाजिक जीवन के उत्कर्ष के लिए निरंतर सघर्ष की ही लीला है। इसलिए उन्हें यह कहने में कोई हिचक नहीं कि कला का संघर्ष समाज के संघर्षों से अलग कोई चीज नहीं हो सकती।

शमशेर को सौंदर्य का कवि माना गया है। विजयदेव नारायण साही ने लिखा है कि अगर उनकी सारी कविताओं के शीर्षक हटाकर उन पर एक ही शीर्षक लगा दिया जाए सौंदर्य, तो कोई फर्क नहीं पड़ेगा। दूसरा सप्तक के वक्तव्य में शमशेर ने कहा कि सुंदरता का अवतार हमारे सामने पल–छिन होता रहता है। इसके ठीक पहले का वाक्य है, हम–आप ही अगर अपने दिल और नजर का दायरा तंग न कर लें तो देखेंगे कि हम सबकी मिलीजुली जिदगी में कला के रूपों का खजाना हर तरफ बेहिसाब बिखरा चला गया है। यह स्पष्ट है कि चारों ओर हर पल होने वाला सुंदरता का अवतार ही कला के रूपों का खजाना है।

मैं एक कहानी लेखक हूँ में लेखक कहता है, ण मुझे वह पचड़ेवाली दुनिया दृ जब मैं उसको अपने से जरा दूरी पर रखकर देखता हूँ दृ रंगीन और सुंदर दिखाई देती है। उसका एक–एक काम। उसके एक–एक भाव, एक–एक संकेत! प्रत्येक उलझाव। पांसे–जाल–संबंध ण उसकी हँसी– खुशी और रोना–गाना–यह सब राग–रंग ण कोई रचनाकार जब जीवन–व्यापार को देखता है तो उसे हर जगह एक सौंदर्यात्मक पैटर्न नजर आता है। एक अत्यंत ही कल्पनाशील डिजाइन पेड़–पौधों, लोगों के चेहरों, उनके शरीर, चलने–फिरने आदि तक में अपने लिए कोई–न–कोई डिजाइन खोज लेता है। अगर ऐसा न होता तो एक समय के बाद नई डिजाइनों का आविष्कार रुक जाता। उसी तरह शमशेर को जीवन की हर एक हलचल में, हरकत में किसी एक नए कला–रूप की संभावना नजर आ जाती है। ..

कविता लिखने के साथ–साथ शमशेर चित्र भी बनाते थे। दिल्ली में जब वे उकील आर्ट स्कूल में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे थे, तब की अपनी रूटीन के बारे में लिखते हैं, हर चीज और हर चेहरे को बगौर देखता कि उसमें अपनी ड्राइंग के लिए क्या तत्व खोज सकता हूँ ण। उस खोज का, हर चीज, और चेहरे और दृश्य या स्थिति और गति का, अपना विशिष्ट आकर्षण कम न होता था । कहा जा सकता है कि कलाकार का नजरिया सौंदर्यात्मक ही हो सकता है और कुछ नहीं, भले ही वह राजनीतिक मसले पर लिख रहा हो या किसी चेहरे

की खूबसूरती आंक रहा हो। हम पहले शमशेर का वह कथन देख चुके हैं कि कलाकार किसी जाहिरी रूप को अभिव्यक्त नहीं करता, वह उसके कलात्मक रूप को अभिव्यक्त करता है।

यथार्थ रूप को कलात्मक रूप में तब्दील करने के लिए कवि का सौंदर्यात्मक दृष्टिकोण ही मध्यस्थ की भूमिका अदा करता है। उनका यह रवैया समझना जरूरी है, नहीं तो इस तरह के सरलीकृत निष्कर्षों पर पहुंचना आसान होगा कि वे हर चीज, हर घटना, हर भाव को खुशनुमा बना देते हैं या उनका दिल खुशनुमा दुनिया में ही रमता, या फिर साही की तरह हम उनकी हर कविता के ऊपर सौंदर्य शीर्षक चिपकाकर उन सबकी अलग–अलग विषय वस्तु, उनमें व्यक्त अलग–अलग मनोभावों पर पटरा फेरते हुए उन्हें सौंदर्यवादी करार देंगे।

छायावादी शब्दों के बाहुल्य के बावजूद इसमें एक नयापन है। इसी रंग में रंगी हुई है उनकी मैं भारत–गुण–गौरव गाता शीर्षक कविता, जिसमें उन्होंने भारत की वंदना की है। इस राष्ट्र–वंदना में कोई नई ध्वनि सुनाई नहीं पड़ती। ध्यान देने योग्य है तो सिर्फ यह चीज कि भारत को सारी दुनिया से न्यारा दिखाने की कोशिश नहीं है। इस कविता में राष्ट्रवादी आक्रामकता भी नहीं है। ऐसे भारत को माथा झुकाया गया है, जो भविष्य का प्रेम–सूत है। वैसे, राष्ट्र को लेकर आक्रामकता या उत्तेजना शमशेर में प्रायः नहीं दिखलाई देती।

शमशेर उत्तरछायावादी काव्य में यहाँ से वहाँ तक मौजूद तड़प और चुभन के साथ अपनापन महसूस करते हैं, यह उस समय की उनकी कविताओं से भी परिलक्षित होता है। इस दृष्टि से उनकी आज हृदय भर–भर आता है, ज्योति, कवि–कला का फूल हूँ मैं जैसी कविताओं से ही नहीं, वाणी जैसी कविता में भी इस दौर के सुर में उनका सुर मिलता हुआ नजर आता है।

शमशेर का विषाद, मुक्तिबोध के शब्द लेकर कहें तो उनका मनो–वैज्ञानिक यथार्थ था और एक सच्चे कवि की तरह उन्होंने इसे व्यक्त किया। उदिता के आरंभ में जगदीश अग्रवाल के नाम एक पत्र शीर्षक कविता में अपने टूटे हुए मन के बारे में वे बताते हैं गद्य के आवरण में टूटा हुआ था काव्यध बहुत टूटा हुआ–सा थाध स्वयं जीवन के समान। वे खुद को ऐसा महसूस करते हैं रू छंद से बाहर, पंगु मानो, भावना से रहित–ध शून्य। ऐसी स्थिति में गहरे काले, नीले रंगों के प्रति कवि का आकर्षण स्वाभाविक ही मालूम होता है, क्योंकि वे उसकी मनोदशा के अधिक निकट पड़ते हैं। उदासी और अकेलेपन का यह अहसास उदिता की कई कविताओं में है, चुका भी हूँ मैं नहीं में संकलित कुछ कविताओं में भी जो आरंभिक दौर की ही है) यह मिल जाता है।

यह आधी रात शमशेर की बिल्कुल अपनी है। पहली दो पंक्तियों में दीर्घ ध्वनियों से रात के घिरने का भाव मूर्त होता है। फिर रुक–रुक का प्रयोग और बारह–बारह के सारे अक्षरों को तोड़कर एक–दूसरे से अलग–अलग कर देने पर एक जगे हुए, सांस रोक कर इंतजार करते हुए, आधी रात को देख रहे व्यक्ति की अनुभूति मिलती है। कुत्ते भूकने लगते हैं, दूर जाते किसी पथिक के बिरहा गाने की आवाज अचानक सुनाई दे जाती है दृ इन दोनों ही ध्वनियों से रात के अकेलेपन का अहसास और गहरा हो जाता है। कविता का अंत तो इस आधी रात के विषाद को और तीखा कर देता है दृ नीम का पेड़ बिल्कुल खामोश खड़ा है, पत्तियाँ स्थिर हैं, अचानक उल्लुओं के एक जोड़े की कर्कश आवाज इस सन्नाटे और स्थिरता को चीर देती है। गहरी, तीखी अवसाद की यह अनुभूति हिंदी कविता में उस अंदाज के जन्म की सूचना देती है, जिसे बाद में श्याम कश्यप ने शमशेरियत का नाम दिया।

शमशेरियत की नींव अकेलेपन के अवसाद की जरूर है, और यही उनका मूल भाव है इसलिए बहुत बाद में भी हलचल और भीड़ में भी वे अकेले खड़े दिखाई दे जाते हैं। पर ऐसा नहीं कि उनमें एकाकीपन और अवसाद ही अवसाद है। मुक्तिबोध ने लिखा है कि लेखक को भयानक से भयानक परिस्थितियों में भी मानव–ऊष्मा प्राप्त होती रहती है। मानव–ऊमा का यह सुख स्पर्श जो मनुष्य को अगतिकता के भाव से बचाता है या कम करता है, अपने–आप में एक बड़ा मानव–मूल्य है।

शमशेर की सौंदर्य–संवेदना का विस्तार प्रकृति, मनुष्य से लेकर मानवीय भावों तक है। शुरू से ही प्रकृति के अलग–अलग रंग उन पर गहरा असर डालते रहे हैं। वे प्रायः रंगों में और गतियों में ही प्राकृतिक रूपों को ढलता हुआ देखते हैं। प्रकृति से उनके कवि–मन के विचित्र संबंध को समझने के लिहाज से उदिता की भूमिका का यह खंड देखना उपयोगी होगा, शामों की झुरमुट में, जब पच्छिम के मैले होते हुए लाल पीले बैंगनी रंग हर चीज को लपेट कर अपने गहरे मिले–जुले धुंधलके में खोने–से लगते हैं दृ आपने क्या उस वक्त कभी ध्यान दिया है कि कैसे हर चीज एक ही खामोश राग में डूबने लगती हैण्? शुरू से ही आसमान और रंग उन पर एक खास ढंग से असर डालते हैं। दूसरी खासियत यह है कि प्रकृति के दृश्यों का अंकन उस ख्याल के साथ जरूर होता है, जो उन्हें देखते हुए मन में उठता है।

उदिता में ही संकलित लहरें। शामध्ध वह नगर शीर्षक कविता में शाम के समय के बादलों का अंकन मिलता है, जिनके बीच से तरह–तरह से रोशनी आ–जा रही है और कई रंगों की सृष्टि कर रही है। यह बादल

बैंगनी–संदली, भूरे, सुर्मयी–सिंदूरी, धुले–सांवले, पीले–गुलाबी से, ऊदे–कारी, नीले– गहरे–से मटमैले हैं। देखने की बात है कि शमशेर ने कितनी बारीकी से रंगों को पहचाना और अलग किया है। उनकी इस तरह की कविताओं को देखने के बाद कहना पड़ता है कि हिंदी के किसी और कवि ने इतना मगन होकर सांध्यकालीन आकाश को नहीं देखा। पर ये बादल स्थिर हैं या चल रहे हैं भारीध्शांत ढलते, नींद से भरेध् सपनों से बोझिल धीरध् अपने अंत से विज्ञध् संतुष्ट। जिन सपनों से बोझिल ये बादल हैं, वे दरअसल किसी की याद है। शमशेर शेष कविता में उस ख्याल की बातें करते हैं, जो इस शाम ने उनके मन में किसी की याद दिलाकर पैदा कर दिया है।

राष्ट्रीय संग्राम के दौर में वह साम्यवाद को भी अपनी कविताओं में स्पष्ट करते रहे हैं। राष्ट्रवाद और स्वतंत्रता संग्राम के फलक में वह निजी संदर्भों पर भी अपनी लेखनी चलाते हैं। 1944 में ग्वालियर में मजदूरों पर हुए गोलीकांड को वह द्रवित होकर अपनी कविताओं में बयां करते हैं। 1946 में मुंबई दंगों पर भी वह लिखते हैं। कश्मीर को लेकर उनके विचार आजादी के समय काफी मुखर रहे हैं। शमसेर बहस और स्पष्टीकरण से भी बचते रहे हैं। वह एकांगी विचारधारा को पोषित करने के बजाय समन्वय पर जोर देते हैं। मानव धर्म, एकता, शांति, प्रेम, सौंदर्य और आशावाद उनकी कविताओं का मूल उत्स है। शमशेर का दिल बड़ा है। वह समकालीन कवियों की कविताओं की समीक्षा भी करते हैं। उन पर तटस्थ़ होकर टिप्पणी करने से उनको कोई गुरेज नहीं है। शमशेर की काव्य रचनाओं की एक झलक उनकी इस कविता में समाहित है।

काल,

तुझसे होड़ है मेरी अपराजित तू–

तुझमें अपराजित मैं वास करूं।

इसीलिए तेरे हृदय में समा रहा हूं

सीधा तीर–सा, जो रुका हुआ लगता हो–

कि जैसा ध्रुव नक्षत्र भी न लगे,

एक एकनिष्ठ, स्थिर, कालोपरि

भाव, भावोपरि

सुख, आनंदोपरि

सत्य, सत्यासत्योपरि

मैं–तेरे भी, ओश श्कालश ऊपर!

सौंदर्य यही तो है, जो तू नहीं है, ओ काल !

निष्कर्ष

शमशेर की कविताओं का आप किसी अन्य अभिप्राय के लिए इस्तेमाल नहीं कर सकते। वह अपने आत्यंतिक अर्थ में परम नैतिक कविता है, प्रार्थना की तरह पवित्र। शमशेर की संपूर्ण काव्य–साधना के आशय को अशोक वाजपेयी इस प्रकार व्यक्त करते हैं दृ उनकी दुनिया टूटी हुई बिखरी हुई है, पर अपनी सुंदरता और अर्थमयता में मुकम्मल। उसमें टूटे–बिखरे हुए से ही सजग, पर सहज, संयमित, पर तनाव–भरी मानवीयता सहेजने और हम तक पहुँचाने की संकोच और संदेह भरी चेष्टा है।

संदर्भ

1. साहित्य का आत्म–सत्य, निर्मल वर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम, 2००६
2. चिंतन दृष्टि, डॉ.. नंद कुमार राय, बुक्स इंडिया, नई दिल्ली, प्रथम,
3. समकालीन दर्शन, बसंत कुमार लाल, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली, प्रथम, ण्६६ण
4. भगवद्गीता, डॉ.. राधाकृष्णन्, सरस्वती विहार, दिल्ली, सातवां, ण्६८०
5. भारतीय दर्शन आलोचन और अनुशीलन, चंद्रधर शर्मा, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, प्रथम, ण्६६०
6. कबीर, हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, ण्ण्वां, □००ण

7. सबद (कबीर वाङ्मयरू खंड– 1), डॉ.. जयदेव सिंह, डॉ.. वासुदेव सिंह, विश्वविद्यालय, प्रकाशन, वाराणसी, चतुर्थ, २००७

8. पाश्चात्य दर्शन की दार्शनिक प्रवृत्तियां, जगदीश सहाय श्रीवास्तव, ज्ञान भारतीय, द्वितीय, ୨६६८

9- साक्षात्कार, कृष्णदत्त पालीवाल, आर्य प्रकाशन मंडल, दिल्ली, 2003

10- आस्था और सौंदर्य, डॉ. रामविलास शर्मा, राज कमल प्रकाशन, दूसरी आवृत्ति, २००६